प्रातः सभा 17-12-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। रूहानी बाप बैठ समझाते हैं रूहानी बच्चों को। यहां बैठे हो, यह तो तो पक्का निश्चय हो गया है नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार कि हम आत्मा हैं। एक बाप के बच्चे सभ ब्रदर्स हैं। जो भी मनुष्य मात्र है सभी ब्रदर्स हैं। अभी सभी ब्रदर्स को बाप कहते हैं यहां बैठे हो तो मुझ पतित-पावन बाप को याद करते हो। या बुधियोग कहां और तरफ भटकती है। माया बहुत भटकाती है। बाप फिर भी कहते हैं चारों तरफ से बुधि योग निकाल एक बाप को याद करो। माया भटकावेगी जरूर। न चाहते भी बुधि कहां न कहां भागती रहेगी। अभी तो बाप सम्मुख बैठे हैं तो तुम बच्चे जानते हो हम आत्माओं का बाप आया हुआ है, पावन बनने की ड्रील सिखलाते हैं। 84के चक्र का ज्ञान भी बाबा ने दिया है। और यह भी बच्चे2 कह समझाते हैं जितना याद करेंगे तुम उतना ही पावन बनते जावेंगे। पावन बनने लिये याद बहुत जरूरी है। 84 का चक्र अभी पूरा होता है। अभी हम फिर से घर जाते हैं। अनेक बार हमने घर गये हैं। याद की यात्रा से पवित्र बन नम्बरवार पुरुषार्थ ही घर जाना है। सभी का बेहद का बाप एक ही है। जो भी मनुष्य मात्रहैं सभी भाई2 हैं। इसमें जिसम की तो बात ही नहीं। अपने को भी आत्मा समझो। हम आत्मा पावन थी। अभी पतित बनी हैं। फिर पावन जरूर बनना है। स्वीट बाप को, जीवन दान देने वाले बाप को वा हीरे जैसा जीवन बनाने वाले बाप कोयाद जरूर करना है। सिवाय बाप के और कोई को भी याद न करना है। अन्त में यह याद ही काम आवेंगे। भल कोई2 वेद शास्त्र आदि पढ़े हुये हैं तो वह दृष्टान्त निकाल समझाने की कोशिशकरते हैं। जैसे बाबा भी कव2 मिसाल देते हैं। ग्रन्थ में है मनुष्य से देवता कैसे करत न लागे बार ... बेहद के बाप बिगरतो कोई भी मनुष्य से देवता बनान सके। मनुष्य सभी हैं पुरानी दुनिया में। तो नई दुनिया का लायक बाप ही बनाते हैं। तो ऐसे दैवीगुण भीधारण करनो है। बुधि में ज्ञान का मथन चलता रहे। अपने को आत्मा समझो यह भी बाप ने ज्ञान दिया है ना। अपने को आत्मा समझ बेहद के बाप को याद करो। फिर सृष्टि का चक्र भी समझाते हैं। बाप ज्ञान का सागर है। ज्ञान से ही सदगति होती है। बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझो। यह ज्ञानदेते हैं। बाप को याद करो। ज्ञान और विज्ञान। आत्मा को ज्ञान से परे जाना है। यहबुधि में रहना चाहिए। विज्ञान अर्थात ज्ञान से परे। ज्ञान से परे अर्थात शांतिधाम तो सभी जावेंगे। आत्मा का स्वधर्म है ही शान्त। घर भी है शान्तिधाम। मनुष्यों को इन बातों का पता नहीं है। यह पारलौकिक बाप बैठ समझाते हैं। बच्चों को परमधाम से ड्रामाके पलैन अनुसार आया हूं तुमको ले जाने लिये। तुम पतित हो ना। कहते भी हैं ड्रामा का पलैन भी कहता है सभी पतित विकारी हैं। विकार से ही पैदा होते हैं। इसलिये भ्रष्टाचारी कहा जाता है। यह है भ्रष्टाचारी वह देवी देवतायें हैं श्रेष्ठाचारी। अभी हम भ्रष्टाचारी से श्रेष्ठाचारी कैसे बनें वह बाप बैठ समझाते हैं। बाप को याद करो तो पवित्र श्रेष्ठाचारी बन जावेंगे। याद से ही श्रेष्ठ बनना है। बाप जो समझाते हैं वह धारण करना है। ऐसे नहींयहां से बाहर जाते भूल जाना है। धंधा-धोरी आदि भी भूल करो। बच्चे पूछते हैं माना का दाना कौन बनेंगेबाप कहते हैं माला का दाना वह बनेंगे जिनकी कर्मातीत अवस्था होगी। सिवाय बाप के और कुछ याद न होगा। बहुत धनवान हैं कारखाने आदि हैं तो वह सभी भूल कैसे सकते। तुमको कुछ भी याद न रखना है। जानते हो हम आत्मायें बाप के बच्चे हैं। भाईयों को यह नालेज देते हैं। और कोई तत्व नहीं है। मेरा 2 तो कुछ भी है नहीं। तुम जानते हो हम सभी रूहानी कनेक्शन में हैं। आगे देह को ही याद करते थे। आत्मा याद नहीं आती थी। सारी आयु देह को ही याद करते रहे। अभी बाप देही-अभिमानी बनाने का पुरुषार्थ कराते हैं। बाप जानते हैं बच्चे घड़ी2 भूल जाते हैं। बाप टाईम भी देते हैं 8 घंटा इस रूहानी सेवा में दो। वह तो है हद की सर्विस। यह तुम सारे विश्व की सेवा करते हो। सारा दिन तो कोई याद कर न सके। आत्मा ही समझते रहे शरीर है नहीं। फिर तो कोई काम भी कर न सको। इसलिये बाप टाईम देते हैं तुमबेहद की सर्विस करते हो। सभी को कहते हो अपने को आत्मा बाप को याद करो तो तुम्हारे

सभी पाप मिट जावेंगे। यह भी जानते हो अपनी राजधानी स्थापन हो रही है। सभी तो सूर्यवंशी चन्द्रवंशी नहीं बनेंगे। यह भी समझते हो सतयुग से लेकर त्रेता तक बहुत थोड़े ही होंगे। फिर वृधि को पाते रहते हैं। जैस बाप विचार सागर मथन करते हैं ऐसे2 तुम भी मथन करते हो। बच्चों को सिखलाते हैं, करनकरावनहार बाप है ना। तो प्रेक्टीकल मे कर के सिखलाते हैं। ऐसे2 करो। खुद भी याद करते हैं, तुमको सिखलाने लिये समझाते हैं। मुझ बाप को याद करो। और सभी को भूल जाओ। परन्तु यह पिछाड़ी की अवस्था होगी। अभी नहीं भूल सकेंगे। पुरुषार्थ करते2 आखीरीन मे तुम्हारी विजय माला बननी ही है। सतयुग त्रेता में जो आते हैं वही विजय पहनते हैं। सभी तो नहीं आते। कोई तो बहुत देरी से आते हैं। यह सारी माला बन रही है। तुम्हारी आत्मा जानती है हम रुद्र बाप के माला में पिरोये रहेंगे फिर नम्बरवार आवेंगे। ड्रामा बड़ा स्क्युरेट बना बनाया है। कल्प2 यह एक दो के पिछाड़ी आते रहते हैं। सभी फिर इकट्ठे जावेंगे। नाटक में भी पार्ट बजाने नम्बरवार आते हैं। सभी इकट्ठे नहीं आ जावेंगे। तुम आत्मायें भी एक्टर्स हो। आत्मा यहां शरीर धारण कर पार्ट बजाती है। एक्टर्स का रहने का स्थान ब्रह्मलोक है। यहां पार्ट बजाने लिये शरीर लेते हैं। यह सभी बातें तुम्हारी बुधि में है। और कोई की बुधि में नहीं हैं। हम स्वीटहोम के रहने वाले हैं। वह घर नहीं समझते। कहते हैं हम ब्रह्म में लीन होजावेंगे। जैस सागर से बुलबुदा निकल सागर में लय हो जाता है। हम भी ब्रह्म में लय हो जावेंगे। ब्रह्म ही ब्रह्म है। जहां देखो ब्रह्म की ब्रह्म। ब्रह्म को ही ईश्वर समझते हैं। यह बातें उन्हों की बुधि में बैठेगा ही नहीं। तुमको ही समझेंगे यह उल्टा बताते हैं। तुम उनको उल्टा समझेंगे। उन्हों का तो धर्म ही अलग है। हां शान्तिधाम तो सभी जावेंगे। बाकी पार्ट उनका अलग है। एक एक आत्मा को अपना पार्ट मिला हुआ है इनको ही वन्डर कहा जाता है। कितना महीनता में जाना होता है। आत्मा कितनी छोटी है। जैस बाप ज्ञान का सागर है वैसे तुम भी ज्ञानवान बनते हो। वह हैं भक्तवान तुम हो ज्ञानवान। भक्तवान माना रात के रहने वाले। तुम हो ज्ञानवान दिन के रहने वाले। तुम समझते हो हम दिन में भी रहने वाले हैं रात में भी रहने वाले हैं। आधा कल्प सुखधाम आधाकल्प दुःखधाम में तुम रहते हो। स्क्युरेट मिनट, सेकण्ड आदि सभी हिसाब बनाया जाता है। एक सेकण्ड का भी फर्क नहीं पड़ सकता। उनको कहाजाता है दूरन्देश। तुम्हारी बुधि जानती है हम आत्मायें स्वीटहोम में रहने वाले हैं। तुम्हारे सिवाय और कोई की बुधि में नहीं हैं। हम इतना समय वहां रहते हैं फिर पार्ट बजाने आते हैं। यह बातें अभी तुम सुनते हो। तुम्हारे में भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार समझते हैं। कोई तो अच्छी रीत धारण करते हैं कोई भूल जाते हैं। बाप जो बीज रूप है उनको झाड़ की नालेज है। यहनालेज और कोई भी मनुष्य मात्र में नहीं। वह तो है ही शुद्रसम्प्रदाय। तुम हो ब्राह्मण सम्प्रदाय। ब्रह्मा कुमार कुमारियां। यहज्ञान सिर्फ तुम्हारे पास है। आते2 यहतुम्हारा झाड़ भी वृधि को पाता जावेगा। तुम्हारी बुधि में सारा ज्ञान है। तो बाप समझाते हैं सिवाय एक के और सभी भूल जाना पड़ता है। तुम बच्चों के पास कुछ भी है नहीं जो याद आये। कोई बाल बच्चे नहीं। धन नहीं। यह शरीर है उनका भी भान मिटाना है। अपन को आत्मा समझना है। बस और कुछ है नहीं। शरीर ही नहीं तो कुछ भी याद रह न सके। पूरा आत्मअभिमानी बनना है। मेरे पास कुछ भी है नहीं जो अन्त में याद पड़े। गायन है ना अन्त काल जो स्त्री सिमरे ... अगर अपन पास ऐसी चीज होगी तो वह सिमरण में आवेंगे जरूर। तुम्हारा तो कुछ भी है नहीं। क्यों तुमको फलानीचीज याद आती। तुम तो दे दिया ना फिर याद क्यों आनी चाहिए। मेरे है ही नहीं। खलास कर दिया या नहीं की इसमें तुमको क्यों आता है। अगर अपना समझेंगे तो फिर याद आता रहेगा। बाबा को दे दिया ना फिर तुमको ख्याल क्यों आता। तुम भूल जाओ। बाबा ने कहा रखा है तो तुमको क्यों याद पड़ता। याद आती है तो नुकसान कर देगी। तुमको सभी भूल जाना है। पहले2 तुम आये तुम्हारे पास कुछ भी नहीं था। तुमको नई राजाई मिलती है पुरानी कुछ है नहीं। जैस मनुष्य मरते हैं तो करनीघोर को पुराना चीज सभी देदेते हैं ना। अभी तुमने ने भी इस ख्याल को - - - - - - - - -

१७-१२-६२

से दिया है। हमारे पास कुछ नहीं। मैं तो बाप का बच्चा हूं। पुरानी चीज़ कोई है नहीं। शरीर भी नहीं। नई चीज नई दुनिया। वहां जाना है। वहां हम हीरे जवाहर के नये महलों में जावेंगे। तुम पुरुषार्थ करते ही हो नई दुनिया का राज्य लेने। कहते हैं हम ना० बनेंगे। खुशी की बात है ना। पुरानी कोई भी चीज़ याद न आये तब माला के दाना बनेंगे। 16208 के बड़े3 माला मंदिरों में होते हैं। माला के दाना तो बहुत बनेंगे। जितना नजदीक पहले आवेंगे उतना ही सुख पावेंगे। जो पीछे आते हैं वह इतना सुख नहीं पाते। सुख थोड़ा पाते हैं तो दुःख भी थोड़ा पाते हैं। तो बाप समझाते हैं ~~ख~~ यह ख्याल रखो पिछाड़ी में कुछ भी याद न आये। ~~रिसे~~ अर्पण किया हुआ चीज याद न आये। बाप कहते हैं मैं ऐसी चीज लेता ही नहीं हूं जो पिछाड़ी में रह जाये और भरकर देना पड़े। मैं तो गरीबनिवाज हूं ना। गरीब विचारों पास है ही क्या। बच्चे भी समझते हैं हमारा तो कुछ भी है नहीं। फिर माया किसको तंग करती है तो भागन्ति हो जाते हैं। फिर मांगते हैं कि हमने जो दिया है वह दियो। इसके लिये हरिश्चन्द्र का मिसाल है ना। दान देकर फिर मांगते हैं ऐसे भी हैं। माया एग डंस लेती है। एकदम माया तबाई बना देती है। प्रतिज्ञा भी करते हैं बाबा हम तो आप के हैं। चाहे मारो चाहे प्यार करो। यह हरताना कब भूलेंगे नहीं। ऐसे बाप को कब नहीं छोड़ेंगे। परन्तु माया हरा देती है। 10-20 वर्ष बाद भी ~~कहते~~ कहते हैं हमारा दिया हुआ वापस करो। अरे तुमने कणा दाना दिया अथाह लेने लिये फिर कहते हो हम ने दिया। शर्म नहीं आता। कौड़ी देते हो हीरे लेते हो। फिर भी तुम दिये हुये कौड़ी मांगते हो। तुम ने इतना खाया वह भी निकालो पेट से। सर्विस कहां की। यह तो डिस~~सि~~सर्विस करते हो ना। डिस सर्विस करने से इतना दिन जो खाया वह भी तुम्हारे ऊपर कर्जा चढ़ गया। तुम जाकर दासियों के भी दास बनेंगे। बाबा लॉ (कानून) समझाते हैं। प्रेक्टीकल में ऐसी2 बातें होती है। बेड़ा पार होने बदली और ही डूब जाती है। बेड़ा पार होने का मतलब है यह ल०ना० बनना। फिर माया का बनने से बेड़ा डूब जाता है। जाकर डेड चमार बनते हैं। गाया हुआ भी है आश्चर्यवत कथन्ती सुनन्ति सुनावन्तो ... फिर अहो मम माया तुमको गिरावन्ती। कितनी बलवान है। तुम भी समझते हो बात बिल्कुल ठीक है। यह कब दिल में आना न चाहिए हम ने दिया। ख्याल आया तो घाटा पड़ जावेगा। बाप से तो तुम लेने आये हो ना। यह क्यों कहते हो हम देते हैं। हिसाब करो वहां क्या जाकर बनेंगे। कोई के पास है ही 10 पैसा उससे एक पैसा भी देते हैं तो महल बन जाते हैं। सुदामा का मिसाल है ना। चावल मुट्ठी भी सच2 को ले आते हैं। यह भी हमारा पड़ा रहे। हमको महल मिल जावेगा। तो बाप ~~खुशी~~ ~~हा~~ खुश होते हैं। वाह! इनको तो जरूर महल मिलनी है। बहुत प्यार शुभ भावना से ले आते हैं। हेउ जीरा चना, चौरा भी ले आते हैं। बाबा सुदामा मिसल यह हम भी डाल देते हैं। अहो भाग्य उन विचारों की। जो है ले आते हैं तो कितना ऊंच बनेंगे। तुम बाप के बने हो तो यज्ञ से परवरिश होती है। बाहर में तुमको फर्स्ट क्लास अच्छे कपड़ आदि मिलते हैं वह यज्ञ में डाकल कर बदली कर लो। हम फिर वह अच्छी2 चीजें साहुकारों को दे देंगे। जो पहनने वाले हैं वह खुश हो जावेंगे। रखकर क्या करेंगे। सौगाद दी जाती है। अच्छी चीज देख खुश होंगे। कदम2 पर हमारी वही एक्ट चलती है जो कल्प2 चलती है। तुम्हारे कदम2 में पद्म है कल्प2 मिसल। इसलिये देवताओं के पांव में पद्म दिखाते हैं। इसका भी अर्थ होगा ना। तुम्हारा कदम2 जो पास होता है वह पदमों की आमदनी होती है। तुम आते ही हो पदमापदमपति बनने। इतने तुम महान सौभाग्यशाली हो। तुम्हारा पुरुषार्थ ड्रामा प्लैन अनुसार ही चलता रहता है। ड्रामा पुरुषार्थ कराती रहती है। एक तो तुम परवस हो, रावण के राज्य में हो ना फिर ड्रामा के भी परवस हो। बाप कहते हैं मैं भी ड्रामा के वस हूं। ड्रामा अनादि अविनाशी बना हुआ है। वह कोई के वस नहीं है। ड्रामा कब बना ड्रामा तो अनादि चलता रहता है। ड्रामा में नम्बरवन मत मिलती है तुमको ईश्वर की। जिस ईश्वरीय मत से तुम देवता बनते हो। मनुष्यों की मत छी छी बनाती है। अच्छा रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुड मार्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।